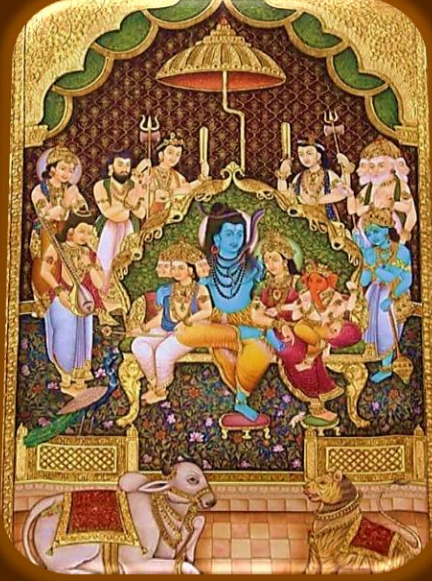


सोमवारचे भजन



पद

गणराजपार्यीं मन जड जड जड । एकदंत गजवदनविराजित ।
मोदक भक्षिसी भड भड भड ॥ ध्रु. ॥ वेदभुजांगी शेंदुर चर्चित ।
फरशांकुश करी खड खड खड ॥१॥ पीतांबर जरि वरि
फणिवेष्टित । मूषक चालवि दड दड दड ॥२॥ माणिक म्हणे
मतिमंद मुक्यासी । वाचे बोलवि घड घड घड ॥३॥

भजन

आदि अंती तूं गणराजा। विघ्नें वारुनि घेसी पूजा ॥

पद

ब्यागने गुरुवीगे शरण नी होगो ॥ध्रु॥

हृदय कमलदल्ली गुरु चरण के इट्टू। प्रेमल्लि जोगळ जोगो ॥1॥

माणिकने गुरु शरणक्के होगी। स्वयमेव ब्रह्मनी आगो ॥2॥

भजन

जय गुरु जय जय गुरु। दत्ता परब्रह्म सद्गुरु ॥

पद

सांब तुजविण मज रक्षि दुजा कोण असे रे ॥ध्रु॥

येई कैलासवासी शशि भाळिं धारणा। त्रिपुरारि त्रिनयन त्रिविध
तापहरणा। नंदिवाहन नागभूषण चर्मवसन जटामार्जी गंगा वसे रे
॥1॥

येई भस्मधार भद्रभाल भवविदारका। निजानंद स्वानंद नित्य
निर्विकारका। हर हर हर गर्जति सुर सुमन अपार तुजवरी वर्षे रे
॥2॥

येई पंचवदन परमपुरुष पार्वतीपती। दशकंठ वरद दशकर दैदिप्य
फाकती। तारि तारि तारि भव हा निवारी। माणिक उद्गारी दास
तुझा रे ॥३॥

भजन

हर हर हर हर सांब सदाशिव । शिव शिव शिव शिव सांब
सदाशिव ॥

पद

मन हे भज भज भज शिव सांब सांब सांबसांब ॥ध्रु.॥

चंद्रभाल कंठनील डमरु करीं धरि त्रिशूल । शोभत गळा रंड माळ
वरी तो जगदंब दंब ॥ १ ॥

जटा गंग भस्म अंग कुंडल कानीं शोभेभुजंगा। सन्मुख उभे श्रृंग
भृंग वाजवि शंख भुंब भुंब ॥२॥

गोवाहन नेत्र तीन दशकर जो पंचवदन। माणिक मना जाय शरण
टाकुनिया दंभ दंभ ॥३॥

भजन

उमावरा हो उमावरा। मज दीनावर कृपा करा ॥

पद

सांब सदाशिव शिव शिव हर हर। गर्जतां कालही कापत थर थर
॥ध्रु.॥

गौरीनाथ हा शंकर भोला। शोभे ज्याच्या गळा रुंडमाळा ॥1॥

वसत सदा जो स्मशानी सदना। मारुनि केला असे भस्मची मदना
॥2॥

एक्याभावे जपे शिवनामा। माणिक म्हणे तया चुके यमधाम ॥3॥

भजन

पंचवदन त्रिनेत्रालंबा। जटा गंग वामांगी अंबा ॥

पद

शिव शंकर शंभो हर हर हर।

नित उठ सुमिरन मन कर कर कर ॥ध्रु.॥

ले जल चावल बेलकी पतियाँ शंभूके माथे धर धर धर ॥1॥

गाल बजाय के नाम लिये तब कालहि कांपत थर थर थर ॥2॥

माणिक कहे शंभूदासन को नहीं किसूका डर डर डर ॥3॥

भजन

बैलवाहन गिरिजाको नाथा। अंगबभूत चंदा सोहे माथा ॥

पद

भोला तोरी सूरत लागत नीको। शंभू तोरी मूरत लागत नीको
॥ध्रु.॥

अंग बभूत गले रुंडमाला। माथे चंदन टीको ॥1॥

कान भुजंग सुहावत कुंडल। ओढे छाल बाघांबर नीको ॥2॥

माणिक के प्रभु ऐसे सदाशिवा। भावहि भक्तिन भूको ॥3॥

भजन

नीलकंठ बाघांबरधारी। विश्वनाथ दीनन सहकारी ॥

अष्टक

पातकी घातकी मी असें किं असा।
मन हे भजनीं न वसे सहसा।
नाहिं देव द्विजाप्रति पूजियला।
प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला ॥1॥

विषयांध आणि अति मंदमती।

कधिं नाहिंच केली तुझिये स्तुती।

दुर्बुद्धि बहु सुजनी छळिला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥2॥

स्वधर्म तो सोडि अधर्म धरी।

परदारधना अभिलाष करी।

धरि संगत मी कुश्चळ कुटिला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥3॥

अन्यायी खरा परि दास तुझा।

अपराध क्षमा करि कोण दुजा।

धरि हातीं मला करि तू आपुला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥4॥

कनवाळु तुझेविण कोणि नसे।

वदती अठरा आणि साहि तसे।

अति पापी अजामिळ उद्धरिला ।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥5॥

अरि मित्र समान तुला श्रीहरी।

मजला ही प्रतीति आलीसे बरी।

पुतनाप्रति मोक्ष तुंवा दिधला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥6॥

पातकी शरणागत होय जरी।
गुण-दोष न जाणसि मुक्त करी।
म्हणुनि दिनवत्सल नाम तुला।
प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला
विनवीतसे माणिकदास तुला।
निर्दालुनि पातक तारि मला।
हीन दीन परी पदरीं पडला।
प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

॥7॥

॥8॥

भजन

राम राम राम राम। सीताराम सीताराम ॥उपासना मार्तंड

सोमवारच्या आरत्या

अष्टक

परमपुरुष परमेश्वर परातीत परशिवा।
परम दिव्य पंचवदन पंचाग्नी वैभवा।
परातीत पार्वतिपति पार तुझा नच परा।
शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा
त्रिपुरांतक त्रिनयन त्रिविधतापलोपका।
त्रिपुटीतलरहिवास तीन लोक व्यापका।
तेहतीस कोटि देव तल्लिन तव पदतिरा।
शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा

॥1॥

॥2॥

भालचंद्र भस्म अंग भक्ष वायु भूषणा।
 भव्यगात्र भूकुटिनेत्र भानु भासतो गुणा।
 भस्मासुर भक्तवरद भवभंजन भवहरा।
 शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥३॥
 कंठनील कर्णि व्याल करीं चर्मधारका।
 करुणाकर खर पर धर कर्पूरसम कांतिका।
 काशीपती कैलासनाथ कालिकावरा।
 शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥४॥
 महादेव हे महेश मन्मथमदमर्दना।
 माधवप्रिय मरुतवर्य मुनिमानसरंजना।
 मत्सर मद महामल्ल मारका मनोहरा।
 शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥५॥
 सांब सदाशिव शक्तिनाथ तात षण्मुखा।
 सर्वसंहारका तूं शरणागत रक्षका।
 स्मरतां सरसि सकल देव साह्य होसि सुरवरा।
 शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥६॥
 विश्वेश्वर विश्वपाल विश्वबाह्य अंतरा।
 विषभक्षक विघ्नहारक विजयी विश्वभरा।
 वीरभद्र वीरेश वंद्य विधि वसुंधरा ।
 शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥७॥

निराकार निष्कलंक निराभास निर्गुणा।

निर्द्वेष्टा निजानंद निबिड नित्य नूतना।

नरहरिसी निजपद दे नको जन्म दूसरा।

शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर श्रीहरा ॥8॥

बसवेश्वराचे अष्टक

बसव बसव बसव बसव बसव नेंबिने। बसव बसव बसव नेनसि
बसव नादने ॥ध्रु॥

ताइ बसव तंदि बसव बळग बसवने। मित्र बसव गोत्र बसव सूत्र
बसवने ॥1॥

अरस बसव रंक बसव रूपि बसवने। कुरूपि बसव स्त्रीनु बसव
पुरुष बसवने ॥2॥

नीनु बसव नानु बसव गुरु बसवने। शिष्य बसव ज्ञानि बसव
अज्ञानि बसवने ॥3॥

हिंद बसव मुंद बसव यडबलके बसवने। म्याल बसव तेळगे बसव
नडुव बसवने ॥4॥

बेडु बसव काड्डु बसव माताडु बसवने। विरक्ति बसव शांति
बसव भक्ति बसवने ॥5॥

योगि बसव त्यागि बसव भोगि बसवने। रोगि बसव आगि बसव
होगि बसवने ॥6॥

जिवनु बसव शिवनु बसव माया बसवने। काया बसव प्राण बसव
लिंग बसवने ॥7॥

अय्या बसव क्रिया बसव नडनुडति बसवने। पादोदक बसव
प्रसाद बसव आनंद बसवने ॥8॥

पृथ्वि आप तेज वायु आकाश बसवने। निर्गुण बसव सगुण बसव
माणिक बसवने ॥9॥

श्रीवीरभद्र अष्टक

मनसु नेनसु महारुद्र वीरभद्रगे। दुःखहारक सुखकारक दायक भद्रगे
॥ध्रु॥

पुर्वदल्लि दक्ष शिवगे अभ्युत्थान बेडिदा।

कुडवल्लिलदर कुमतिइंद कुटिल आडिदा।

शिवनिंदा आडि शैव भक्त काडिदा।

सदाशिवगे बिट्टु मखारंभ माडिदा ॥1॥

यज्ञदोळगे देवि तंदि मनिगे होदळु।

दक्ष मदादिंद अंदा याके बंदळु।

अवमान कंडु शक्ति सिट्टु आदळु।

कोपब्यरदु अग्निकुंडदोळगे बिदळु ॥2॥

देवी अग्नि ऐक्य नोडि कहरवायिते।

स्वर्ग मृत्यु पाताळ सुट्टि होइते।

दक्षसह ऋत्विजगण मोरि मायिते।

कठिण काणि भूमि कंपवागि काणते ॥3॥

दूतमुखदि वृत्तांत केळिपेडिगे।
 त्रिपुरारि त्रिनयन बंदा सिडिगे।
 अश्व रथा हस्ति आदि माडिवडिगे।
 मंदि न्यरदु दूतगणवु महाघडिगे ॥4॥
 रुद्र आगि भूमि म्याल जटा बिडिदा।
 प्रलयरुद्र वीरभद्र अवतार हुडिदा।
 क्रूर तीव्र महातेज कवच तोडिदा।
 सेना बिट्टु दक्षमखके बंदु मुडिदा ॥5॥
 वीरभद्र नोडि ग्रहगणवु देवरू।
 पक्षिरूप हिंडदु प्राण दक्कि होदरू।
 यष्टु मूगु मीशि किंवी कडदु बिदरू ।
 यष्टु देह बिट्टु स्वर्ग हादि हिडिदरू ॥6॥
 कुंड भग्न माडि द्वेषि दंड व्हडदने।
 तीव्र खड्ग तेगेदु दक्षतली कडदने ।
 अमित लोक हिडदु त्रिशुलदिंद बडदने।
 विजयवागी हर हर हर न्यनसि नडदने ॥7॥
 दुष्टदमन सुष्टसंरक्षणार्थगे।
 बिट्टु कैलास बंदा मृत्युलोकगे।
 दूर माडुतान प्रभु भक्त आर्तगे।
 नरहरिगे दारु इल्ला अवन वहरतुगे ॥8॥

शेजारती

निद्रा करीं महारुद्रा योगेंद्रा। स्वप्नसुषुप्तीविण ज्ञानमुद्रा ॥ध्रु॥

भूमीं मंचक शेज व्याघ्रांबरी। शेष उशी लेप गज चर्म वरी ॥ 1 ॥

चिता भस्माची सुगंध उटी। धत्तुर पुष्पाचे हार घाली कंठी॥2॥

शीतोदक विष भरलासे प्याला। विडे तांबुल भांगेचा प्याला ॥3॥

शशी नक्षत्र समया दुहेरी। वात निजहातें हळु पंखा वारी ॥4॥

दासी दया क्षमा आणि शांती। तूर्या अर्धांगी श्रीपार्वती ॥5॥

निरंजनी निद्रा करी नित्यानंदा। दास नरसिंह सेवितो पादा ॥7॥

जयकार

॥ पार्वतीपतये हरहर महादेव ॥

॥ अवधूत चिंतन श्रीगुदेव दत्त ॥

॥ सद्गुरु माणिकप्रभु महाराज की जय ॥